(1)

B.A. History Hon's Part-II

Paper: III, Unit-I, Date: 30.9.2020 Lecture No. 31

Session: इल्तुतमिश और रजिया सुल्तान

रजिया सुल्तान का कार्यकाल केवल 1236 से 1240 तक था। मुस्लिम शासनकाल के इतिहास में वह एकमात्र महिला है जिसने राज्यसत्ता का उपभोग किया और तीन वर्षों से अधिक समय तक दिल्ली की गद्दी पर उसका अधिकार रहा। इल्तुतमिश ने अपने शासनकाल में वंशानुगत राजतंत्र की नींव दिल्ली सल्तनत में रखने का प्रयास किया था। अपने बेटों को शासक के रूप में अयोग्य पाते हुए अपनी बेटी रजिया को उत्तराधिकारी मनोनीत किया, जो एक अनोखा प्रयोग था। इल्तुतमिश द्वारा उत्तराधिकारी के रूप में रजिया के मनोनयन को शासक वर्ग ने स्वीकार नहीं किया। उलेमा के मतानुसार "इस्लाम में महिला को सुल्तान का पद ग्रहण करने की अनुमति नहीं है। दूसरी ओर सामन्तों का वर्ग एक पुरुष प्रधान समाज में एक महिला की सत्ता के आगे सर झुकाने को तैयार नहीं था। दिल्ली की जनता ने स्वेच्छा से और सक्रिय ढंग से रजिया को सिंहासन पर बैठाया था। रजिया के सर्वप्रथम निजामुलमुल्क जुनैदी को वजीर के पद से हटा दिया, क्योंकि वह उत्तराधिकारी के संघर्ष में उसका विरोधी था। उसने प्रांतपतियों में भी अपने विरोधियों को हटाकर अपने विश्वासनीय अधिकारियों को नियुक्त किया। इस फेर-बदल से असंतोष और भी बढ़ा। अब यह स्पष्ट होता है कि रजिया के सफल हो जाने पर चालीसा दल का अस्तित्व ही मिट जायेगा। दूसरी ओर उलेमा वर्ग भी रजिया का विरोध करने लगा।

सामंतों में बढ़ते विरोध को देखते हुए रजिया ने एक नयी योजना अपनायी। उसने तुर्क सामंतों की शक्ति को तोड़ने के लिए गैर तुर्क सरदारों को प्रोत्साहन एवं पदोन्नति देना आरंभ किया। एक हबशी सरदार मालिक याकूत को रजिया ने पदोन्नति दी। दूसरी ओर गैर तुर्क सामंतों का नवगठित दल संख्या और अनुभव में तुर्क सामंतों से कमजोर था और रजिया को आवश्यकतानुसार समर्थन देने की स्थिति में नहीं था। रजिया के विरोधियों ने अब उसकी कमजोरी का लाभ उठाने का फैसला किया। मलिक एतगीन इख्तियारुद्दीन और मलिक अल्तूनिया, दो सरदारों ने रजिया को सत्ता से हटाने का षड्यंत्र रचा और उन्हें वजीर का समर्थन भी प्राप्त हो गया। अल्तूनिया ने अपने प्रान्त तबरहिन्दा (भटिण्डा) के क्षेत्र में विद्रोह कर दिया। रजिया ने राजधानी का प्रशासन मलिक याकूत को सौंपकर विद्रोह दबाने के लिए प्रस्थान किया। रजिया के राजधानी से दूर जाते ही वजीर द्वारा मलिक याकूत की हत्या कर दी गई और रजिया के सौतेले भाई मुइज्जुद्दीन बहराम शाह को दिल्ली का सुल्तान घोषित कर दिया गया। राजधानी से संपर्क टूट जाने के कारण रजिया की स्थिति कमजोर हो गयी और अल्तूनिया ने रजिया को बंदी बना लिया। रजिया ने अल्तूनिया के असंतोष का लाभ उठाकर उससे अपना संपर्क बनाया। उसने अल्तूनिया से विवाह कर लिया और दोनों की सम्मिलित सेना ने दिल्ली पर चढ़ाई कर दी परन्तु वे युद्ध में पराजित हो गये और वापस भटिण्डा लौटते हुए उन्हें डाकुओं द्वारा कैथल के पास मार दिया गया। इस प्रकार चार वर्षों से भी कम में रजिया की सत्ता का अंत हो गया।

मध्यकालीन भारत में किसी महिला द्वारा राजसत्ता का उपभोग का यह एकमात्र उदाहरण है। पुनः एक ऐसे सुल्तान का जो उदाहरण प्रस्तुत करती है जिसे जनता ने सुल्तान की गद्दी पर आसीन किया। इस दृष्टिकोण

से वह अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद बिन तुगलक जैसे महत्वपूर्ण शासकों की अग्रगामी प्रतीत होती है। जब ख्वारिज्म के शासक इनन कल्पा को मंगोलों ने निष्कासित कर दिया तो वह रजिया से मंगोलों के विरुद्ध सैनिक गठबंधन का प्रस्ताव लेकर भारत आया। रजिया ने उसे भारत में शरण दी। इस प्रकार उसने अपने पिता इल्तुतमिश की नीति को ही अपनाया और मंगोलों से दिल्ली सल्तनत को सुरक्षित किया।

यह आश्चर्यजनक बात है कि राजनैतिक दूरदर्शिता और योग्यता प्राप्त होने के बावजूद भी एक शासक के रूप में रजिया सफल नहीं रही, अपने राज्य से वंचित होना पड़ा। रजिया को न तो सामंत वर्ग और न उलेमा वर्ग ने ही खुले दिल से स्वीकार किया। चूँकि ये दोनों वर्ग अत्यन्त प्रभावशाली थे इसलिए इनका विरोध रजिया के लिए समस्या का कारण बन गया। ऐसा कहा जाता है कि रजिया सुल्तान की असफलता का एकमात्र कारण उसका एक महिला होना था। राजनैतिक दूरदर्शिता, कूटनीतिक योग्यता, वीरता, दृढ़निश्चय आदि जैसे गुण रजिया में वर्तमान थे। यही कारण था कि इल्तुतमिश जैसे व्यक्ति ने उसे अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था। अतः एक महिला होना ही रजिया की असफलता का मुख्य कारण प्रतीत होता है। रजिया की पराजय ने चालीसा दल की स्थिति को और मजबूत किया। मगर जल्दी ही बहराम और उसके सरदारों के बीच मतभेद आरंभ हो गया और दो वर्षों के संक्षिप्त शासनकाल के पश्चात् बहराम को चालीसा दल के सरदारों ने सत्ता से हटाकर कैद कर लिया।

बहराम के पश्चात् अलाउद्दीन मसूद शाह को शासक बनाया गया जो इल्तुतमिश के बेटे फिरोज का पुत्र था। नायब-ए-ममलिकात के रूप में कुतुबुद्दीन हसन की नियुक्ति हुई और मुहज्जबुद्दीन की हत्या करके अबूबक्र को वजीर बनाया गया। 1246 में उसने मसूद शाह के स्थान पर नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान घोषित कर दिया। नासिरुद्दीन महमूद के राज्यारोहण के साथ ही प्रशासन पर सामंतों का पूर्ण प्रभाव स्थापित हो गया था। 10 वर्षों के अन्दर चार शासक दिल्ली की गद्दी पर बैठाए गए थे और सभी का अन्त अप्रिय ढंग से हुआ था। उसने अपने मलिक-नायब बलबन को सारी सत्ता सौंप दी। नासिरुद्दीन के बीस वर्षीय शासनकाल में बलबन ही प्रधानमंत्री के रूप में राज्य का सर्वेसर्वा बना रहा। केवल कुछ समय के लिए (1252-53) में वह अपने पद से हटाया गया और इमादुद्दीन रैहान को यह पद मिला। वह पहला भारतीय मुसलमान था जो इस उच्च पद को प्राप्त कर पाया। बलबन ने जल्दी ही यह पद पुनः प्राप्त कर लिया। बलबन भी नासिरुद्दीन के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार करता रहा। उसने अपनी एक बेटी का विवाह नासिरुद्दीन महमूद के साथ कर दिया था और सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में वह सुल्तान से परामर्श किया करता था। इस प्रकार नासिरुद्दीन महमूद के शासन काल में शांति बनी रही और साथ ही साथ सामंतों का प्रभुत्व सल्तनत की राजनीति में इसी तरह स्थापित हो गया। 1265 में नासिरुद्दीन की मृत्यु पर बलबन ने सुल्तान का पद ग्रहण कर लिया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जमनगर